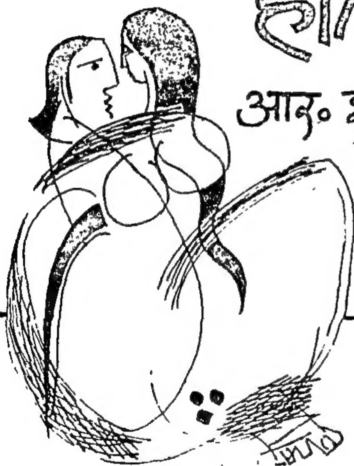
क कविता प्रकाशन, बीकानेर

कथा शुरू होती है

आर० इमरोज



प्रकाशक : कविता प्रकाशन, तेलीवाड़ा, बीकानेर-334001
संस्करण : प्रथम 1986
आवरण : हरिप्रकाश त्यागी
मूल्य : तीस रुपये मात्र
मुद्रक : विकास आर्ट प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली-३२

KATHA SHURU HOTI HAI (Poetry) by R. Emrose Rs. 30.00

यह कृति
श्री श्याम मिश्र के हाथों में सादर...

आत्मकथ्य

घने जंगल का दरख्त
दरख्त, जंगल के दिन-दिन
घने होने को लेकर क्या कहे ?
खुद को इस षड्यंत्र मे बराबर का
भागीदार पाता है।

ठंडी अंधेरी रात में
अलाव को तापते, नर्म-गर्म
लाल-पीली-नीली लपटो के
उस पार

जो देखा और अनुभव किया—
उसको सिर्फ रेखांकित किया है

धुआं है !
और बहुत है—
जब तक धुआं रहेगा—कहना
भी जारी रहेगा···

□ □ □

क्रम

कथा-कविता—एक

कथा-कविता—दो

कथा-कविता–एक

सुबह होने वाली है

एक बेघर आदमी मेरे पास आया
और बोला—
"क्या मेरे घर का पता बता सकते हो ?"

मैंने कहा—
"मेरी बगल में बैठ जाओ, सुबह
होने वाली है।"

दाने की तलाश

कई दिनों से देख रहा था—कूड़े का एक बड़ा सा ढेर और उससे जूझती छोटी-सी चिड़िया।

"क्या ढूंढती हो ?"
एक दिन मैंने पूछा तो वह चट से बोली—
"दाना।"
"मिला ?"
"नही।"
"फिर कही अन्यत्र क्यों नही जाती ?"

"मेरी माँ, और माँ की माँ भी यही
ढूंढा करती थी। उन्हें नही मिला तो
क्या, मैं ढूंढ लूंगी।"

और एक दिन आया। चिड़िया माँ बनकर
कूड़ा हो गई और उसकी जगह उसकी
बेटी ने ले ली।

पेड़ की छांव

चिलचिलाती धूप मे हल चलाते किसान ने
सुना—"पसीने के ये मोती मुझे दे दो।"

उसने सिर उठाकर पूछा—
"तुम कौन हो ?"

"ईश्वर।"

किसान ठठाकर हँस पड़ा —
"पसीने के इन मोतियों का तुम क्या
करोगे ? मेरे उस पेड़ की छाव ले लो,
जहां दुपहर को मैं सुसताया करता हूं।"

ईश्वर का सिर झुक गया।

झुके हुए सिर की कथा

मैं—
तुम—
यह—
कोई नहीं जानता
दुख क्या है ?
क्योंकि
मैं—
तुम—
वह—
कोई नहीं जानता
सुख क्या है ?

फिलहाल हम सब
सिर झुकाये
एक बदबूदार, तंग सुरंग से गुजर रहे हैं
सुरंग समाप्ति पर भी
हम सिर नहीं उठा सकते,
क्योंकि वहां से
एक पहाड़ की चढ़ाई शुरू होती है।

पहाड़ के
शिखर पहुंचते-पहुंचते
धड़ जाने कहां छूट जाता है—

रह जाता है
सिर्फ सिर।

उस सिर को चाहे
शिखर से लुढ़का दीजिए
चाहे
मैदान में रखवा दीजिए
कोई फर्क नहीं पड़ता
चाहे गड़वा दीजिए।

जख्मी होते हुए......

टूटते आकाश को
मैंने
बीसू द्वारा

[बीसू की पहचान, पाँच पेट /
उसके बीवी बच्चे हैं]

भुजाओं पर झेलते
सीने पर सहेजते और
आहिस्ता
आहिस्ता
धरती पर रख
एड़ी से कुचलते देखा

देखा
ऐसे में
बीसू को होते जख्मी
और धरती को लहूलुहान

केंचुली

सांझ ढले
नाग बाम्बी लौटा, उसने देखा
नागिन मृत पड़ी है।

नाग रोया
बहुत रोया
फिर फन उठाकर पड़ोस के
गांव पहुंचा।

सुबह के सूरज ने देखा
समूचे गांव की देह नीली पड़ चुकी है
और नाग-नागिन लम्बी नींद सो रहे हैं।

करीब के दरख्त के
ठूंठ से अटकी हवा में
फहर रही है उनकी केंचुली।

आंगन का नीम

आगन के नीम ने आधी रात उदास
स्वर में पूछा—
"भैया ! वे सफेद झक कपड़ों वाले
आये नहीं ? गांव में बहुत अंधेरा
है।"

मैं हँसा—
"आयेंगे···जब फिर चुनाव होंगे।"
और करवट बदलकर सो गया।

मुंह अंधेरे पत्नी ने जगाया—
"रात को नीम टूट गया।"

गुमशुदा आदमी का बयान

"वही से शुरू होकर वहीं
ख़त्म होता है—
ख़त्म होने का सिलसिला।"
यह एक गुमशुदा
आदमी का बयान है—

"जहाँ से चलकर बिलखता हुआ
एक मांस का लोथड़ा
आकाश की तरफ़ उठाये हुए
आता है हाथ।

होता है—
रफ़्ता रफ़्ता उसे अपनी रगों में बहते
नग़मों का अहसास,
यह अहसास आकार ले
कि हो सके उस स्पन्दन से साक्षात्कार
यक-ब-यक उसे लील जाता है
कोलाहल का दैत्य—
नज़र आते हैं दरिंदाई लम्बे नाखून
फ़क़त लम्बे और लम्बे होते दांत।

होता है—
रफ़्ता-रफ़्ता। कैंची-सी जुबां को
लग जाता है जंग—
कानो में कील का काम देती है अंगुलियां।

खाना

वह अनोखा भिखारी था। भीख में केवल बासी रोटी लेता। अगर दूसरी सामग्री मिलती तो साभार लौटा देता।

एक दिन मैंने पूछा—
"तुम ऐसा क्यों करते हो!"

वह हँसा—
"बाबूजी! अच्छा खाना अब हजम नहीं होता है।"

कटखने गांव में........

बरसों बाद
शहर से लौटा तो देखा
गांव में हाट
सड़क भी है,
और जब-तब नाचता रहता है।

बच्चों को देख
पागलों की मानिंद
भौंकने लगता है। और
बुढ़ाओं को देख
मूंद लेता है आंखें।

मेरे अभिवादन के
प्रत्युत्तर में—
वह उठकर बैठ गया और
फिर कटखने कुत्ते की तरह
मुझ पर झपट पड़ा।

तराशना

लड़की
लड़के की हथेली पर
लिखती है—"फूल"

लड़का सिहरने लगता है।

"चुम्बन।"

लड़का हाफने लगता है।

"बर्फ।"

लड़का जम सा जाता है।

"भाप।"

लड़के के हलक में
एक चीख ठहर जाती है।

"हथौड़ा और छेनी।"

लड़का पत्थर तराशने लगता है।

पेड़

राजा ने वज़ीर से पूछा—
"हमने जुल्म का जो पेड़ लगाया था, उसका
क्या हुआ ?"

तभी राजमहल में कांसे का थाल घनघना
उठा।
वज़ीर कुछ कहता, इससे पूर्व ही दाई
ने प्रवेश किया—
"महाराज की जय हो ! पुत्र हुआ है।"

खुली मुट्ठी ओक

याद आता है—
गांव, गांव का तालाब, तालाब किनारे
औघड़ बाबा की धूणी। उनके टंकार करते
ठहाके—
ओक, प्यास और पानी का रिश्ता...।
खुली मुट्ठी ओक होती है और बंद
हथौड़ा...।

जंगल में

वह भीड़ से पैदा हुआ और भीड़ में
खो गया। भीड़ में उसने खुद को खोजा,
नहीं मिला।
मिला तो इसका अहसास कि वह एक
जंगल के बीचोंबीच खड़ा है, जो प्रतिपल
घना होता चला जाता है।

भ्रम

एक दिन उजली सुबह-सी लड़की ने ढलती
सांझ-सी आंखों वाले लड़के में उतरते
हुए पूछा—
"सूरज डूबता क्यों है ?"
एक पल···एक सवाल। लड़के को लगा,
उसके भीतर कुछ करवटें ले रहा है। उसने
भी पूछ लिया—
"सूरज उगता क्यों है ?"

सवाल सवाल ही रहे। जवाब में वे एक-
दूसरे को देखते रहे। और देखते-देखते
बरसों बाद एक दिन—

वे अपने नन्हे-मुन्ने के साथ एक बरगद
की ठंडी छाया में खेल रहे थे, उन्हें
अनायास लगा—
सूरज न उगता है, न डूबता है। यह तो
आंखों का भ्रम है जो आंखों में पलता है।

चीख

तालाब के ठहरे हुए पानी में उसने एक
कंकर उछाला ।
लहरों का छोटा-सा वृत्त, बड़ा होता
जब किनारे से जा टकराया तो उसे लगा,
किसी ने उसकी हथेली में एक ऑलपिन
उतार दी है—

और एक चीख चुपचाप हवाओं में
बिखर गई है ।

लैम्पपोस्ट और वह

"मेरे सीने में यह जो ठहरा हुआ चाकू है, उसके
हत्थे पर मेरी अगुलियों के निशान है।"

लैम्पपोस्ट चौंकता है—"अच्छा!"

"ज़िंदा रहने का अहसास आहिस्ता-आहिस्ता
लगा है वर्फाने।"

लैम्पपोस्ट पूछता है—
"कौन हो?"

"खून से तर कपड़ों में एक ज़िंदा लाश,
जिसे जाड़े की स्याह रात में कोई यहाँ
डालकर चला गया है।"

लैम्पपोस्ट कहता है—"ओह!"

कर्तव्य

राजा ने वजीर से पूछा—"प्रजा कैसे है ?"
वजीर बोला—
"ठीक है महाराज ! न हँसती है, न रोती है।
सुबह की पहली किरण से शाम का इन्तजार
करती है।"

राजा बहुत खुश हुआ, बोला—
"चलो हमने अपने पूर्वजों की तरह राजा
का कर्तव्य निभाया।"

खूबसूरत लड़की और ख्वाब

एक खूबसूरत लड़की ख्वाबो में एक इन्द्रधनुष देखा करती। अक्सर उसका ख्वाब किसी बच्चे के रोने की आवाज से टूट जाता।

वह चौंककर उठ बैठती।
तब उसकी आंखो मे ढेर रसोई का धुआ
और हाथो मे स्वेटर बुनने के लिए सलाइया
हुआ करती।

कुछ नहीं

"तुम्हारे सामने क्या है ?"
मटमैले आकाश को ताकते
बूढ़े से
शरारती बच्चे ने पूछा।

बूढ़े ने कहा—
"कुछ नही।"

"और पीछे ?"
"कुछ नही।"
"और तुम्हारे पास ?"
"कुछ नही।"

बच्चा खिलखिलाया / तालियां
पीटते बोला—"कुछ नही।"

भूल भुलैया

देवनगर के राजा को मूर्तिकला से बेहद प्रेम था।
उसने प्रण किया, हर रोज एक मूर्ति की स्थापना
के पश्चात् वह अन्न-जल ग्रहण करेगा।

देवनगर मे एक के बाद एक, इस तरह अनेक
देवालय बनते चले गये। यहां तक कि इन
मंदिरो की एक भूल भुलैया बन गई।
इस मंदिर से प्रवेश करो और उससे निकलो।

यह सिलसिला यहा तक चला कि एक बार
राजा स्वयं पूजा के लिए निकला और
कभी नही लौटा।

शुरुआत

'भूख की कोख से पैदा होने के बावजूद वह बेहद ईमानदार था। उसकी ईमानदारी पर खुश होकर ईश्वर ने एक आलीशान महल उसे रहने के लिए दिया।
उसने मना कर दिया।

ईश्वर ने उसे पारस पत्थर दिया। उसने सधन्यवाद लौटा दिया।

"अच्छा ! तू मर्जी मुताबिक मांग, जो तुझे चाहिए।"

"बन्दूक।"

ईश्वर ने उसे बन्दूक दे दी। और पूछा—
"कुछ और चाहिए ?"

"हां, अब मेरे निशाने पर आ जाओ। अपनी शुरुआत तुम्ही से करता हूं।"

षड्यंत्र की कथा

मैली लगने लगती
जब चेहरे की दूधिया चादर
सलवटें गिनने को अकुलाती हैं अंगुलियां।

कौन-सा है वह बिन्दु
जहा तक पहुचते-पहुंचते हांफ जाता है
आदमी—
कि आगे बस रेंगता है...।

कितना सहलाये बर्फ से अतीत को
कि पिघल जाये और
हो जाये बाहर-भीतर का पानी एक।

क्या झुठलाया नहीं जा सकता
उम्र की अदालत मे इस सत्य को
कि एक वक्त आता है जब
हर किरण से आने लगती है
षड्यंत्र की गंध।

आदमकद अहसास का गीत

अनचीन्ही
गंध का एक गीत
होठों पर आ जाता है—

जब ओस भीगी घास पर नंगे पांव चहलकदमी
करते हैं हुवाव,
आंखों में लेकर अलस्सुबह की मुस्कान।

जोरों की बरसात के बाद तेज चली हवा से
हिलने लगता है जब
खिड़की का परदा और लगता है
जैसे उसके पीछे छुपा है कोई।

पतझड़ में जब गिरे पत्तों से होता
दूर चला जाता है एक आदमकद अहसास
और चटक-चटक जाता है सन्नाटे का कांच।

बदलियों से निकलकर उस झुरमुट पर
नर्म किरणें बरसाता है ताजा चांद
जहां घनेरे पेड़ हैं
और साफ नजर आने लगते हैं जब
हिलते-डुलते कुछ साये।

आदमी होने का जुर्म

तुम्हारी आंखों मे ख्वाब महकते हैं
और मेरी आखो में चसते हैं सवाल
बोलो—
ऐसे में कैसे मुमकिन है हम दोनो का एक होना ?

एक होने के लिए वहुत जरूरी होता है
एक जमीन का होना,
उसके जर्रे-जर्रे को बांचते-यांचते
गुनगुनाने लगना—
जबकि तुम्हारी आखों मे आसमान मुस्कराते हैं
और मेरी आखो में चीखते है रेगिस्तान।

अस्तु,
इसमे पहले कि खोदें अपनी असलियत
और सावित हो जाये एक दूसरे के लिए नरभक्षी
आओ हम कसम उठायें
कि अगले जन्म में आदमी होने का जुर्म
नही करेंगे।

स्याही की कथा

जाड़े की स्याह रात मे देर तक बजती रही
टेलिफोन के तार की तरह कोफ्त।

तब परत-दर-परत मिट्टी हटाकर
कब्र से भांककर देखा
बदल गया हो शायद कुछ—

शहर शीर्षासन की मुद्रा में पढ रहा था ऋचाएं
लोग उधेड़-उधेड़ सी रहे थे उबासियों के पैबंद।

नुक्कड़ पर एक नये मदारी ने लगा लिया था मजमा
करिश्मों से आक्रांत भीड़ दे रही थी फरिश्तों का दर्जा।

चुकता करने के बाद सांसों का हिसाब
'मंगलू' अपनी वसीयत मे लिखवा रहा था भूख।

बंद थे रोशनदान
और खिड़कियां
दरवाजे-दरवाजे
'टुलेट' की तख्तियां।

जाड़े की स्याह रात में...

कुत्ते

'साहिबा !
आपकी कुतिया हमारे कुत्ते को
मुंह लगा रही है।'
मैंने अपनी पड़ोसन को आगाह किया।

पड़ोसन चुप रही।

'इसके बुरे परिणाम हो सकते हैं।'
'क्या ?'

'पहले से सचेत कर रहा हूं
आपकी कुतिया कुलीन है
और हमारा कुत्ता शेड्यूल कास्ट।

त्रिकोण

तेज हवा में
पेड़ थरथराता है
तूफान में
        टूट जाता है—

पेड़
हारकर जीत जाता है
तूफान
जीतकर हार जाता है जब
सृष्टि-नियंता की
पेशानी की सलवटें
        साफ होती हैं

पेड़ की
जड़ें फूटने लगती हैं—

तेज हवा में
पेड़ थरथराता है
तूफान में
        टूट जाता है।

........रोटी पकती है

सुलगती
सिगड़ी के पास
क्या तुम इसलिए बैठी हो
कि इस जाड़े में उसकी आंच
अच्छी लगती है—

या इसलिए
कि उस पर रोटी पकती है ?

अगर तुम इसलिए बैठी हो
कि जाड़े मे उसकी आच
अच्छी लगती है
तो मेरा वह नाम मिटा दो
जो भूल से
मैंने तुम्हारी हथेली पर लिख दिया है ।

एक दुनिया है

ऊपर आकाश
नीचे धरती
खुली हवा
रोशनी भी,
होने को पिंजरा
पूरी एक दुनिया है

पिंजरे की
चिड़िया सोचती है—

यह सोच
बेकार साबित हो चुके
पंखों की पैदाइश है
एक हारे हुए
सख्स के टूटे
ख्वाबों की नुमाइश है

पिंजरे की
चिड़िया जानती है

ऊपर के नीले आसमान
और हरी-भरी धरती से
उसका कोई रिश्ता नहीं है

इनका होना
अतीत के टुकड़े-टुकड़े
प्यार का दर्द है

हाथ

हाथ,
किसी दुर्घटना में कट जायें
तो दुख होगा—

हाथ,
किसी के द्वारा काट दिये जायें
तो और भी दुख होगा—

हाथ,
किसी के द्वारा बांध दिये जायें
तो छटपटाना होगा—

कटें भी नही
काटे भी नही जायें
बांधे भी नही जायें
इसपर भी तुम कुछ नही कर सको
तो ?…

गुटरूंगूं की कथा

राजा
रानी और
एक कबूतर था,
राजा रानी राज करते
करता कबूतर गुटरूंगूं...।

रानी को कबूतर पर प्यार आता
मोती दाना देती और पूछती—
"बता ! कौन है मुझसे सुन्दर ?"

हां में शीश झुकाता
करता कबूतर गुटरूंगूं...।

रानी
रानी से महारानी, फिर राजमाता हो गई
पुरस्कार में कबूतर को तब
सोने का सुन्दर पिंजरा मिला
पंख फड़फड़ाता
करता कबूतर गुटरूंगूं।

अब राजकुंवर का
खिलौना था यह।

राजकुंवर का जब जी करता
उसके पंखों का मुकुट बनाता
छटपटाता, चुप रहता
करता कबूतर गुटरूंगूं।

राजकुंवर यू
जवान हो गया
और कबूतर पंखविहीन।

अब राजकुवर की अर्द्धांगिनी ने
उसका सदुपयोग कर लिया
कबूतर के ताजा लहू से उसने
अपने होंठ रग लिये।

चूंकि वह
राज कबूतर था
अतएव उसकी स्मृति मे
एक भव्य स्मारक बनवाया गया
'कोई नही' मे सिर हिलाता
करता कबूतर गुटरूगू।

धुएं की पगडंडी

यहा से
मेरे घर के लिए एक पगडंडी निकलती है
तुम्हें याद होगा
बरसात से नहाये दरख्तो के नीचे
तुम्हारी हथेली को बाचते हुए
मैंने कहा था।

तब तुम्हारी सासो में
महक उठी थी तुलसी
आखो मे लहलहाया था
दूर-दूर तक समंदर
यक-ब-यक खनक गई थी चूड़ियां
और होठ हिलकर रह गये थे।

शायद तुम दरख्तों से
झड़ते हुए पत्तों को देखने लगी थी
कि भीतर ही भीतर
कुछ करवटे लेकर पत्थर
हो गया था।

तुम्हारे अधर थरथराये
थरथराकर रह गये थे,
दरख्त गुनगुनाये
खामोश हो गये थे।

देर तक सीने से लगी
जाने कितने

मीठे-कड़वे
घोती रही शब्द-शब्द !
शब्द,
जो सच्चाई की कोख हुआ करते हैं।

फिर डूबती
सांझ में—
अंजुरी में भरकर
तुम्हारा चेहरा देखा,
आंखों की बस्ती में
दूर-दूर तक सन्नाटा था—
और किसी घर से
एक पगडंडी की शक्ल में
उठता हुआ धुआं
स्याह आसमान को चला
जा रहा था।

रक्त कथा.......

जमशेदपुर की चिमनियों से
जब लाल धुआं उठता है
बाम्बियों से निकलकर बूढ़े सांप
बदलने लगते हैं केंचुली।

स्याह इरादों वाले सफेद पोश
संसद को करने लगते हैं आबाद
जिरह चाकू के
धारदार फलक से शुरू होकर
ठहर जाती है हत्थे पर।

नगर-महानगर के बासिंदे
जायकेदार डिनर के बाद
इस दुर्घटना को करार देते है दंगा
और ढीला करने लगते हैं
पजामे का कसा हुआ नाड़ा।

कस्बों
गांवों तक आते-आते लाल धुआं
लंगड़ाने लगता है
देखता है—
लोगों के कसे हुए चेहरे
चिकने पत्थर पर धार खाती कुल्हाड़ियां
और भींची हुई मुट्ठियां

लम्बी सांस के बाद
वह निकल पड़ता है
किसी सुनसान गली की तलाश में

जलती हुई आंखें
उसे लौटते देखती है—
दूर तक चले गये
ताजा लहू के कतरे...

लहू,
लहू के कतरे
लहू,
जिसको नहीं दिया जा सकता
कोई नाम।

ताजा अखबार की खबर

देखते-देखते साफ आसमान
लाल बादलों से भर गया।

कभी न मुंह खोलने वाले पहाड़
एक बाजीगर की मानिंद उगलने लगे
धुआं के गोले--

हांफती हवा के उजले पंखों पर फफोले
गोया प्रसवपीड़ा को होठों-होंठ चबाती
एक शरीफ औरत—

दरख्त हिनहिनाये फिर पांव रोपकर हो गये
बुत
एक-एक पत्ता बिन आहट के आ लगा
धरती के वक्ष से
गोया धरती करवट लेने जा रही हो—
लहूलुहान सूरज को मयस्सर नहीं हो सका
पानी—

सड़कों पर हुजूम के हुजूम नजर आये
नदारद चेहरों के लोग
जिनके कंधों पर एक-एक लाश थी
और होठों पर गुम होता नगमा—

सवाल बस एक था
जो दरवाजे-दरवाजे दे रहा था दस्तक

कि कौन-सा कोना सबसे सुरक्षित
सबसे स्याह—?

दूसरी सुबह के ताजा अखबार की
खबर थी—
कल रात
गिरजाघर की सीढ़ियों पर पड़ी,
पार्लियामेंट पर फहरते तिरंगे के साये में झूलती,
एक खाते-पीते घर के आंगन में सड़ती,
और बंद मुट्ठी में चंद सिक्के लिए
चौराहे पर मुस्कराती बरामद हुईं
चार हमशक्ल लाशें।'

हताहत सूरज की कथा

मैं अकेले में आत्महत्या कर लेता हूं
और लहू सनी अंगुली से
एक प्रश्नचिह्न अंकित कर देता हूं आदमियत पर।

देर तक मैं उसे धधकती आखों से देखता हूं
जो आहिस्ता-आहिस्ता ठंडाने लगती हैं
कि वह प्रश्नचिह्न,
एक पूर्णविराम होने मे नितांत असमर्थ है।

अकेले में मेरा एक हमशक्ल पैदा हो जाता है
जिसे देखकर मैं रह जाता हूं दंग
कि कैसे खप गया बस्ती मे एक प्रेत !

एक प्रेत/जो बराबर चीख-चीखकर
कहता रहा कि वह प्रेत है
और लोग हंसते रहे...।

दरअस्ल प्रेतों की बिरादरी मे
एक शरीफ आदमी खुद को प्रेत साबित
करने का कर रहा था जुर्म !

होते-होते हुआ यह
कि वह शुरू से आखिर तक साबित हो गया
गलत—
जैसे एक नहीं/अनेक सूरज इस गलतफहमी मे
होते रहे हैं हताहत
कि वे एक नगमाती सुबह मे उगकर
मरकरी बाहों वाली शाम की बाहों मे
सुसताने जा रहे है।

पहाड़ी की कोख से

एक के बाद एक
इस तरह अनेक लाशों को दफ़नाकर
जब मैं तुम्हारे पास आया तो बहुत थक चुका था।

तब चाहता था मैं तुम्हारी गोद में सिर रखकर
गदलाये हुए आकाश को पढ़ना
कि सितारे या तो नज़र क्यों आते हैं और
नजर आते हैं तो क्यों हैं पकड़ से इतनी दूर ?

हरी घास पर ठहरी मोतिया बूंदों को
मुट्ठी में लेकर
क्या मैं सूरज से नहीं मिला सकता आखें ?
तब मैं तुमसे पूछना चाहता था—
ख्वाबों का कैसा है वो घर/तुलसी को
सींचता साया/और मोम से मुलायम बालों
वाले दो बच्चों का चहकता जोड़ा,
जो धुंध से प्रकट होकर—
धुंध में हो जाता है लुप्त ?

कि मेरी रगों में नग़माता लहू
रफ़्ता-रफ़्ता क्यों हो जाता है पत्थर,
गोया मैं एक हरी-भरी पहाड़ी की
कोख से पैदा हुआ था।

तट
तट पर मछेरे
...ांझी होठों उगते



गीत भतरे—
अंजुरी,
अंजुरी मे पानी का दर्पण
कि कुछ लमहों को सहसा मिल जाता है आकर,
जहां से चलकर अहसास की एक क्षीण रेखा
दूर क्षितिज से बतियाने लगती है,
सच कहता हूं—
रह रहकर मुझमें लहलहा उठता है
रेत का एक समंदर।

अगर मैं जानता अंगुलियों की सांकेतिकता
आखों की रूमानी भाषा का गीत
जिस्मानी दुनिया का भूगोल और धड़कते
दिल का ठंडा तार
तो सबसे पहले तुम्हारी नम हथेली पर लिखता अपना नाम
और दिखलाता लहू सने अपने दोनों हाथ

उसके बाद होता बस इतना
कि गुनाहों के इस जुलूस मे
[जो मुझे रौंदता गुजर जाता है]
शामिल हो जाता एक और गुनाह।

ईश्वर मुस्कराता है........

मैं
क्यों सोचता हूं
अपने विषय में औ'वलोग तुम्हारे विषय में
हम दोनों से परे कुछ
उस कुछ से भी परे...

अवश्य कोई
अनहोनी होगी।

तुमसे मिलने से पूर्व भी
मैं सोचा करता था
अनहोनी हुई—
नितांत अपरिचित तुम
बहुत अपने हो गये।

तुमसे मिलने के पश्चात भी
मैं सोचता रहा—
अनहोनी हुई
आज हम अविश्वसनीय रूप से
अलग हो चुके हैं।

मेरा सोचना
अब भी जारी है
तो अवश्य कोई
अनहोनी होगी...।

यह मेरे साथ ही नहीं हो रहा है
बहुत पहले

तब न मैं था
न तुम और
न यह
एक निराकार शून्य था।

तब ईश्वर सोचा करता था
और प्रकाश की उत्पत्ति हुई
फिर—
सौर-मंडल
पृथ्वी
वनस्पति और
जीव-जन्तु।

ईश्वर सोचता रहा—
भूतल और सौर-मंडल पर व्याप्त धुंध
धुंध में एक गति
गति शरीर में मूर्त हुई
एक आत्मा—
बन्धन, स्पर्श और दृश्य से परे
एक स्पन्दन।

और
ईश्वर का महाप्राणनायक
पुरुष उत्पन्न हुआ मिट्टी से
मिट्टी की गंध को
सार्थक करता हुआ।

ईश्वर फिर भी
सोचता रहा—

मानव के दो बूंद आंसू
तब प्रकृति-स्वरूप
नारी में ढल गये।

प्रकृति
और पुरुष
वे दोनों मंत्रमुग्ध
उजाले में एक दूसरे को
निहारते रहते
और अंधकार होते ही
लिपटकर सो जाते।

ईश्वर
इसके बावजूद भी सोचता रहा।

तब निविड़ अंधियारी रात में
लहू से लथपथ
कराहटों में लिपटा
प्रकृति ने पुरुष को
एक उपहार दिया।

विस्मय-विमुग्ध
पुरुष अपनी प्रतिकृति देखकर
अनायास ही कह उठा—
यह क्या है?

उस घड़ी
ईश्वर के होठों पर
पहली मर्तबा मुस्कराहट आई।

ईश्वर
आज भी मुस्कराता है
मैं—
तुम—
वह—
हम सब सोचते हैं।

आगजनी

एक हरिजन बस्ती जब जलकर राख हो
गई तो कुछ खबरनवीस पहुंचे ।

उन्होने पाया कि आगजनी मे यद्यपि दस
व्यक्ति जिंदा जल गये तथापि उसकी
कोई मौलिकता नही है ।

फिर भी लौटते वक्त वे एक-एक मुट्ठी
ठंडी राख साथ ले आये ।

दूसरे दिन अखबारो मे छपा—'हरिजन
बस्ती आगजनी काण्ड की राख चूल्हे
सुलगाने मे उपयोगी ।'

संसद में सनसनी फैल गई ।
जांच-आयोग बैठ गया ।
नेताओं के लिए भस्मीभूत
बस्ती तीर्थस्थल बन गई ।

एक-एक कर सभी नेता तीर्थ कर आये ।

पहले पहल तीर्थ से लौटे हरिजन नेताओ
ने वक्तव्य दिया—'बस्ती की राख
चूल्हे सुलगाने मे उपयोगी ही नही,
अपितु खाना भी जल्दी पकाती है ।'

समाजवादी नेताओ ने सहानुभूति प्रकट
की—'बस्ती की राख खाना जल्दी

ही नहीं पकाती अपितु स्वादिष्ट भी
पकाती है।'

किसान नेताओं ने धमाका किया—'यह
खाना स्वास्थ्य के लिए पौष्टिक
भी होता है।'

और अंत में जांच आयोग ने रिपोर्ट
पेश की—'जिस राख में मानवोपयोगी
इतने गुण हों, वह किसी षड्यन्त्र
द्वारा लगाई गई आग की राख
नहीं हो सकती, अपितु यह एक
प्राकृतिक-प्रकोप था।'

ईश्वर ! ओ ईश्वर !!

ईश्वर !
ओ ईश्वर !!
अगर तू कहीं है
तो कान खोलकर सुन
मैं तुझे कभी माफ नहीं करूंगा ।

मैं
मैं नहीं / समूचा
एक युग हूं—
जिसके पांव पेट में उगते हैं
और हाथ मुंह में ।

ईश्वर !
ओ ईश्वर !!
मैं
उस पिता का कीर्तिपुत्र हूं
जो चाहता था मेरा सहारा
और मैंने
उसकी लकड़ी छीनकर
उसीके टखनों पर खींच मारी
कि वह बैठा
गिनता रहे दिन ।

ईश्वर !
ओ ईश्वर !!
मैं उस मां की आंख का तारा हूं
जो

मेरी आंखों से
एक-एक रज-कण
यत्नपूर्वक बीनती रही
और मैं बदले में
उसे देता रहा
पहाड़
के
पहाड़।

ईश्वर!
ओ ईश्वर!!
मैं
उस धरती की पैदाइश हूं
जहा का एक रास्ता
दूसरे रास्ते को निगल जाता है
और जहां
हर पगडंडी जाती है
जंगल से करने को अभिसार।

ईश्वर!
ओ ईश्वर!!
मैं
अभ्रक-मण्डित आग का
एक दहकता पिण्ड हूं
जो इस अंधकार का सीना फाड़कर
देना चाहता है
तुम्हारे दरवाजे पर दस्तक
कि—
आओ अब कर लें फैसला—
सच है
तुम्हारा मुस्कराते रहना
या
मेरा उसी अनुपात मे दहकना?

दहकना
    दहकना और
आहिस्ता
आहिस्ता
एक युग में बदल जाना
        [सीने में लेकर
        एक हिमालय।]

कथा शुरू होती है....

कथा
शुरू होती है
कि राजकुमारी
राजकुमारी न रहकर
एक वेश्या हो गई
और उसका पिता
फ़कत एक राजा।

राजकुमारी का कसूर
सिर्फ इतना था
कि वह बेहद खूबसूरत थी
और थी—
एक राजा की बेटी।

कथा
शुरू होती है
कि प्रजा को संतान की तरह
चाहने वाले राजा पर
अकस्मात बर्बर दस्यु चढ आये।

वह
जाड़े की रात थी
सैनिक गर्म लिहाफों
और सेनापति
एक जवान औरत से
गर्मा रहा था।

कथा शुरू होती है....

कथा
शुरू होती है
कि राजकुमारी
राजकुमारी न रहकर
एक वेश्या हो गई
और उसका पिता
फ़कत एक राजा।

राजकुमारी का कसूर
सिर्फ इतना था
कि वह बेहद खूबसूरत थी
और थी—
एक राजा की बेटी।

कथा
शुरू होती है
कि प्रजा को संतान की तरह
चाहने वाले राजा पर
अकस्मात बर्बर दस्यु चढ़ आये।

वह
जाड़े की रात थी
सैनिक गर्म लिहाफों
और सेनापति
एक जवान औरत से
गर्मा रहा था।

दस्युओं ने
दुर्ग पर कब्जा करने के बाद
राजमहल को घेर लिया
तो राजा ने
वजीर से मशविरा किया।

वजीर
सोच में पड़ गया—

दस्यु कोई सामंत नहीं थे
कि उनके लिये
तन्वंगी सेनापति
एक वजीर का बेटा होता
चुनांचे
मरने/मारने लायक न होता।

वजीर
सोचता रहा
राज-सिंहासन
धरती में धँसता रहा।
हरकारे ने
खबर दी—
महाराज! दस्यु राजमहल में
प्रवेश को हैं।

यकायक
वजीर ने राजा के कान में
कुछ कहा।

राजा ने
एक नजर वजीर और
एक नजर धड़ाधड़ धरती में
समाहित
सिंहासन को देखा—
बोला—ठीक है!

अगर दस्यु
राजकुमारी से जी बहलाकर
लौट जाते हैं
तो हमें क्या आपत्ति है ?
राजकुमारी का भी आखिर
अपने देश के लिए
कोई फर्ज है !'

दस्युओं को
खुश करने के लिए
राजकुमारी को भेज दिया गया।

कथा
आगे बढ़ती है—

दस्युओं को एक मर्तबा
राजकुमारी का जो स्वाद लगा
तो वे
पुनः
पुनः
आते
और राजकुमारी को भोगकर
चले जाते।

राजकुमारी
वेश्या से
एक खिलौना हो गई
और पिता
राजा से दलाल।

धीरे-धीरे
इसका असर समूचे राज्य पर पड़ा
हर पिता ने
अपनी बेटी की दुकान लगा ली।

पंछी-पर-कथा

भोर की
प्रथम किरण के साथ
पंछी
चहचहाया और
सहसा चिहुंक उठा,

पलटकर देखा—
उसके भाई ने उसके
कुछ-पंख नोच लिये है और
वह बहुत खुश नजर आ रहा है।

मेघाच्छादित
आकाश
सावनी फुहारों की ताल पर पंछी
अपनी जीवनसंगिनी के संग
अठखेलियां कर रहा था—

सहसा
एक दबे चीत्कार के साथ
पलटकर देखा—
जीवनसंगिनी ने उसके
कुछ पंख नोच लिये है
और वह खुश नजर आ रही है।

पंछी
चीत्कार पर ग्लानि से भर उठा।

उदास
उदास पंछी

हताहत/डूबते सूरज से
बतिया रहा था

सहसा
वह छटपटा उठा
पलटकर देखा—

एक अजीज ने उसके
कुछ पंख नोच लिये हैं और
वह खुश नज़र आ रहा है।

पंछी
'छटपटाने' पर चकित हुआ।

बिन चेहरे वाले
लोगों के एक शहर में पंछी
चौराहे पर खड़ा था

सहसा
वह चौंका—
एक हुजूम का हुजूम
गुच्छे के गुच्छे
पंख लिये जा रहा था

पंछी ने
पलटकर देखा—
वह पंखविहीन था।

पंछी को अपने
चौंकने पर रंज हुआ।

गांव-गली
शहर
दर-दर दस्तक देता

पंखविहीन पंछी
अपने पंखों की तलाश में
भटकने लगा।

भटकते
भटकते
वह देश की राजधानी जा पहुंचा।
हर किसी से
उसने पखों के बारे में पूछा
मगर पख नहीं मिले।

एक दिन
थका हारा पंछी
संसद के सामने से गुजर रहा था
वहाँ उसे एक अन्य
पंखविहीन पंछी बैठा मिला।

पंछी ने अपने
हमदर्द से पूछा—"तुम्हें पंख मिले?"

हमदर्द पंछी बोला—
"हाँ, मिल गये। चाहो तो तुम्हें
भी दिखला दूं।"

और वह पंछी को
एक दैत्याकार इमारत में ले गया
वहाँ फाइलें और फाइलें थीं।

हमदर्द पंछी बोला—
"देखो, इनमें से किसी भी फाइल को
उठाकर देख लो
उसमें तुम्हारे पंख दर्ज हैं।"

सन्नाटा टूटा

स्याह रात का
सन्नाटा टूटा
राजद्वार पर दस्तक देने को
एक हाथ उठा—

तत्काल
प्रहरी बाहर आया
उसने देखा—
एक नर कंकाल खड़ा है।
गुर्राकर पूछा—'कौन हो ?'

कंकाल ने कहा—
'भूखा।'

'यहाँ राजा रहता है
रोटी नहीं।'
और
राजद्वार
बंद हो गया।

स्याह रात का
सन्नाटा टूटा,
राजद्वार पर किसी ने
दस्तक दी,

तत्काल
प्रहरी बाहर आया,
उसने देखा—

चार हाथों वाला
एक नर कंकाल खड़ा है।

प्रहरी
चुपचाप प्रमुख प्रहरी को बुला लाया।
प्रमुख प्रहरी ने
गुर्राकर पूछा—'कौन हो ?'

कंकाल ने कहा—
'भूखा।'

'यहाँ राजा रहता है,
रोटी नहीं।'

और
राजद्वार
बंद हो गया।

स्याह रात का
सन्नाटा टूटा
राजद्वार पर किसी ने
दस्तक दी,

तत्काल प्रमुख प्रहरी बाहर आया
उसने देखा—
आठ हाथों वाला
एक नर कंकाल खड़ा है।

प्रमुख चुपचाप
कोतवाल को बुला लाया।
कोतवाल ने गुर्राकर पूछा—'कौन हो ?'

कंकाल ने कहा—
'भूखा।'

'यहाँ राजा रहता है,
रोटी नहीं।'

और
राजद्वार
बंद हो गया।

स्याह रात का
सन्नाटा टूटा,
राजद्वार पर किसी ने
दस्तक दी,

तत्काल
कोतवाल बाहर आया
उसने देखा—
सोलह हाथों वाला
एक नर कंकाल खड़ा है।

कोतवाल चुपचाप
सेनापति को बुला लाया।

सेनापति ने गुर्राकर
पूछा—'कौन हो?'

कंकाल ने कहा—
'भूखा।'

'यहाँ राजा रहता है,
रोटी नहीं।'

और
राजद्वार
बंद हो गया।

स्याह रात का
सन्नाटा टूटा
राजद्वार पर किसी ने
दस्तक दी,

तत्काल
सेनापति बाहर आया
उसने देखा —
बत्तीस हाथों वाला
एक नर कंकाल खड़ा है।

सेनापति
चुपचाप वजीर को बुला लाया।

वजीर ने गुर्राकर पूछा—
'कौन हो ?'

कंकाल ने कहा—
'भूखा।'

'यहाँ राजा रहता है,
रोटी नहीं।'

और
राजद्वार
बंद हो गया।

स्याह रात का
सन्नाटा टूटा
राजद्वार पर किसी ने
दस्तक दी,

तत्काल
वजीर बाहर आया

उसने देखा—
असंख्य हाथों वाला
एक नर कंकाल खड़ा है।

वजीर
चुपचाप
राजा को बुला लाया।

राजा ने गुर्राकर पूछा—
'कौन हो?'

प्रत्युत्तर में
ककाल अट्टहास कर उठा।

पैतृक-प्रश्न की कथा

अध्यापक समझाता है—
पढ़ने से मनुष्य महान बनता है
बच्चा सोचता है—
मुड़ा-तुड़ा यह मरियल-सा मास्टर
कहीं से भी महान लगता है ?

चिकने-चिकने
पोथी के पन्ने
जाने कब तितली बन उड़ जाते हैं

हँसता-हँसता
लेकर खाली बस्ता
हल्का-फुल्का
बच्चा घर लौटता

आंखें तरेरकर
पिता
बच्चे से वही प्रश्न पूछता है
जिसका उत्तर
पिता अपने पिता को नहीं दे पाया था ।